Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 11 ~ Issue 9 (2023) pp: 180-183
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

प्रेमचंद और भारतीय किसान जीवन

- दामोदर द्विवेदी

सारांश – प्रेमचंद को कथा साहित्य में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है | इसका आधार उनकी अनुभवजन्य समाज केन्द्रित रचना है| समाज के पीड़ित,वंचित वर्ग अर्थात किसान की समस्या को उन्होंने प्रमुखता दी है | देश के अन्नदाता की दिन-हीन परिस्थिति को ऐसे यथार्थ भावों से रचा की, पाठक के सामने विचारणीय परिस्थिति खड़ी हो गयी | उसका स्वरुप आज की वर्तमान परिस्थिति में भी वैसा ही आभासित होता है | उनकी रचनाये समाज की समस्याओं के प्रति सजग और जागरूक बनाती हैं | गाँव समाज का यथार्थ चित्रण जैसा प्रेमचंद की रचनाओं में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है |
बीजशब्द – किसान ,कृषि ,समस्या , आत्महत्या ,गाँव, कर्ज, बाजार

***R**eceived 06 Sep, 2023; **R**evised 16 Sep., 2023; **A**ccepted 18 Sep., 2023 © The author(s) 2023.*
P**ublished with open access at **www.questjournals.org

प्रेमचंद का संपूर्ण कथा साहित्य गांव की तस्वीर है। प्रेमचंद का काल सन् 1880 से 1936 का है | यह समय प्रथम विश्व युद्ध व द्वितीय विश्वयुद्ध का था और उपनिवेशवाद तथा महामंदी का दौर भी चालू था | प्रेमचंद के जमाने में अंतरराष्ट्रीय बाजार की जरूरत के हिसाब से भारतीय कृषि का पुनर्गठन किया जा रहा था। इस नीति के तहत भारत की कृषि भूमि का उपयोग विदेशी लोगों के लिए किया गया। हम जानते हैं कि अफीम के व्यापार का बाजार चीन था ,उसके लिए भारत की जमीन पर जबरिया अफीम की खेती कराई गई। इस तरह औपनिवेशिक कृषि नीति से भारतीय कृषक व्यवस्था तहस-नहस हो गई। किसान और गांव की व्यवस्था पर इससे बहुत प्रभाव पड़ा। प्रेमचंद ने इन स्थितियों को नजदीक से देखा और प्रस्तुत किया।

गांधीजी ग्राम स्वराज को लोकतंत्र का आधार स्तंभ बनाना चाहते थे। गांधीजी के शब्दों में - "आजादी नीचे से शुरू होनी चाहिए। हर एक गांव में लोगों की हुकूमत या पंचायत का राज होगा। उसके पास पूरी सत्ता या ताकत होगी। उसका मतलब यह है कि हर गांव को अपने पांव पर खड़ा होना होगा, अपनी ज़रूरतें खुद पूरी कर लेनी होगी ताकि वह अपना सारा कारोबार खुद चला सके। यहां तक कि वह सारी दुनिया के खिलाफ अपनी रक्षा खुद कर सके।" [१]

गोदान ही नहीं, प्रेमचंद के सभी उपन्यासों में व्यक्त मंतव्य को इस संदर्भ में याद किया जा सकता है- रंगभूमि ,कर्म भूमि, गबन ,सेवा सदन, सभी में गांव का जो चित्र उभरता है उसमें गांव के जीवन का आधार वैभव या वस्तुएं नहीं ,जीवन मूल्य रहे हैं। अगर हम सामाजिक और मानवीय मूल्यों का अनुकरण करते हैं तो भूख हमें बहुत अधिक परेशान नहीं कर सकती। किंतु अगर हम अपने जीवन को मूल्य रहित बना लेते हैं तो हमारी भूख कभी शांत नहीं होगी। और हम मरीचिका के जैसे भागते रहेंगे ,पर पहुंचेंगे नहीं। प्रेमचंद का कोई किसान पात्र आत्महत्या नहीं करता। वह संघर्ष करता है। मौत को गले लगाता है मूल्यों से समझौता नहीं करता।

इस देश की नियति आज भी गांव के साथ जुड़ी हुई है। गांधीजी के कथनानुसार- "मेरी दृढ़ मान्यता है कि अगर भारत को सच्ची आजादी प्राप्त करना है और भारत के जरिए संसार को भी, तो आगे या पीछे हमें यह समझना होगा कि लोगों को गांव में ही रहना है- शहरों में नहीं ,झोपड़िया में रहना है- महलों में नहीं। करोड़ों लोग शहरों या महलों में कभी एक- दूसरे के साथ शांतिपूर्वक नहीं रह सकते।" [२] आज गांव में एक अजीब सा सन्नाटा पसरा है। चौपाल सूने हैं, सामूहिक एकता की भावना को जैसे कोई श्राप लग गया है। संबंधों की मिठास की जगह सर्वत्र द्वेष भावना पसरी है। सामाजिक परिवर्तन के नाम पर जो कुछ गांव के जीवन की सतह पर उतर रहा है जैसे - भ्रष्टाचार ,व्यक्तिगत लाभ-लोभ, पार्टी बंदी ,जातिवादी अंधता, स्वार्थ, अवसरवाद, अन्याय और अनीति का नंगा - नाच ,नैतिक गिरावट | गांव अब स्वस्थ सुंदर नगरों की ओर भाग रहा है। और महाजनी मानसिकता के नगर अपने समूचे बिष को गांव में संक्रमित करते हुए उसकी छाती पर चढ़कर बैठ गये हैं। गांधीजी का कहना है - "मैं कहूंगा कि अगर गांव का नाश होता है तो भारत का भी नाश हो जाएगा ,गांव का शोषण खुद एक संगठित हिंसा है। अगर हमें स्वराज की रचना अहिंसा के पाये पर करनी है तो गांव को एक उचित स्थान देना होगा।" [३]

जमींदारी व्यवस्था का जन्म भारतीय किसान और गांव के लिए अभिशाप साबित हुआ । इससे सामंतवाद का उदय हुआ। पुलिस गांव में आती है तो कुछ किए बिना नहीं जाती। हमेशा से पुलिस की यही स्थिति रही है । आज भी भारत के गांव का यही सच है । थाने का दरोगा या अफसर आता है तो गांव के बड़े जमींदार के यहां ही बैठेगा ,यही सभी की पेशी होगी। यह सामंतवादी व्यवस्था आज भी जारी है।

आजादी के बाद - जमींदारी उन्मूलन के बाद जरूर यह सपना देखा गया था कि किसान भू -मालिक होगा तो गांव की तरक्की होगी। लेकिन हुआ ठीक इसके विपरीत | सरकारी नीतियों और बढ़ती जनसंख्या ने गांव को तबाह कर दिया। आज का भारतीय गांव यद्यपि भौतिक संसाधनों के मामले में शहरों से टक्कर ले रहा है। कोई भी ऐसी सुविधा नहीं है जो आज गांव तक ना पहुंची हो लेकिन इसकी बहुत बड़ी कीमत गांव को चुकानी पड़ी है । गांव, गांव नहीं रह गया है न अब वहां मरजाद की फिक्र है न मानव संवेदना। बजाय इसके गांव में बेकारी, अलगाव, टूटन पसरा हुआ है| आज के गांव की यह हकीकत है की आमदनी अठन्नी और खर्चा रुपैया। इस तरह उधार पर उनकी जिंदगी कट रही है। छोटे -मझोले किसान बेजमीन हो चुके हैं ,होते जा रहे हैं। बड़े किसान या पूंजीपति पुरानी जमीदारी प्रथा के वाहक बने हुए हैं ।जो समस्या होरी के गोदान में मिलती है वह आज के भारतीय गांव में मुंह बाए खड़ी है।सुदखोरी ,कर्ज ,फसल का उचित मूल्य न मिलना, बढ़ती लागत ,जमीदारों - कारिंदों की आवभगत, पुलिस- दरोगा, थाना -कचहरी इससे 1936 का ही गांव त्रस्त नहीं था ,2023 का गांव भी इन्हीं समस्याओं के आधुनिक रूपों से त्रस्त है। बड़े पूंजीपति और कारपोरेट घराने साम्राज्यवाद के दलाल या जूनियर पार्टनर हैं ।उनके साथ मिलकर वे जनता को इस तरह लूट रहे हैं जैसे अंग्रेजो के साथ मिलकर जमीदारों और मिल मालिकों ने लूटा था। गोदान में इसका स्पष्ट दृश्य है।

प्रेमचंद ने कहा था, 'किसान सबसे मुलायम चारा है|' आजाद भारत का यह किसान आज भी होरी की तरह शोषण का शिकार है| प्रेमचंद किसान, दलित ,स्त्री, कमजोर, बेबस, लाचार लोगों के पैरोकार के रूप में 20 वीं सदी में आए थे । आज 21वीं सदी में भी उन्होंने उस समय जो सामाजिक यथार्थ देखा था ,कोई आमुल परिवर्तन नहीं आया है। गांव में प्रेम का बंधन ,खून का बंधन, दूध का बंधन प्रेमचंद के समय ही टूट गया था । वह आज तक जुडा नहीं है बल्कि दुश्मनी की, प्रतिशोध की शक्ल लेता जा रहा है। खेती किसानी अब जीविका का साधन नहीं रह गई। प्रेमचंद की जुबानी -" आज हालात यह है की खेती केवल मर्यादा रक्षा का साधन मात्र रह गई है, जीविका का भार मजदूरी पर आ गया है|"[४] यह आज का भी सच है आज खेती के बल पर जीवन का गुजर - बसर संभव नहीं रह गया है।

प्रेमचंद की कहानियां पूस की रात, सवा शेर गेहूं, ठाकुर का कुआं ,पंच परमेश्वर, सद्गति ,कफन में जिन समस्याओं को, गांव की जिस दशा को अंकित किया गया है ,अनुपातिक दृष्टि से वही दशा आज भी है। आज भी गांव की मुन्नी अपने पति हल्कू से यही कह रही है, "मैं कहती हूं तुम क्यों नहीं खेती छोड़ देते ? मर-मर काम करो, उपज हो तो बाकी को दे दो ,चलो छुट्टी हुई। बाकी चुकाने के लिए तो हमारा जन्म हुआ है। पेट के लिए मजदूरी करो । ऐसी खेती से बाज आए। " सामाजिक आर्थिक सवाल जो प्रेमचंद के समय थे उनमें कोई बदलाव नहीं आया है। बल्कि स्वदेशी शासक जॉन के बदले गोविंद होने के बावजूद पहले से अधिक क्रूर हो गये है । भ्रष्टाचार का दानव पूरे देश को लील रहा है।समाज में गैर बराबरी बढ़ी है | रुपये की आवक बढ़ने के बावजूद आधी से ज्यादा जनता गरीबी रेखा से नीचे जी रही है | होरी गोदान में हारे हुए महीप की भांति अपने को इन तीन बीघे के किले में बंद कर लिया था। और उसे प्राणों की तरह बचा रहा था । बदनाम हुआ ,मजदूरी की पर किले को हाथ से जाने ना दिया । मगर अब वह किला भी हाथ से निकलता जा रहा है । एक कवि ने ठीक कहा है -

फैलता जा रहा आतंक तेजी से
गिरवी है अब भी होरी के खेत
बाहुबलियों के पास । बंधक है धनिया
कर्ज अदायगी के खातिर
जन्म-जन्मांतरों के लिए यहां।
और प्रेमचंद के फटे जूते पहने
शहरों की तरफ चला जा रहा गोबर
कभी ना लौटने के लिए
अब चर्चा भर शेष है
गांव में गोदान की।

स्पेशल इकोनामिक जोन के नाम पर गांव को रौंदा जा रहा है।आज गांव को बिल्डर ,भू -माफियाओं और कॉर्पोरेट फार्मरों के हवाले किया जा रहा है । सरकारें खुद ऐसी नीतियां बना रही हैं कि छोटे- मझौले किसान खेती करते हुए कर्ज तले दबकर आत्महत्या कर ले या खेती छोड़कर कॉर्पोरेट खेती के लिए रास्ता साफ कर दें। जिससे खेती में पूंजी-पतियों की मनमानी चले। नगरों के वातानुकूलित कक्ष में बैठकर गांव की बेहतरी के लिए नीतियां बनाने का परिणाम है कि गांव का नीतियों से कोई संबंध ही नहीं बन पाता। उनके नाम बताया जाने वाला पैसा घूम फिर कर शहरों में बैठे दलालों की तिजोरी में चला जाता है । दुष्यंत ने ठीक कहा है कि –

*Corresponding Author: - दामोदर द्विवेदी

यहां तक आते-आते सूख जाती है कई नदियां।
मुझे मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा।।

आधुनिकीकरण - औद्योगिकरण वक्त की जरूरत है इससे इनकार नहीं किया जा सकता ,लेकिन मूलभूत मानवीय आवश्यकताओं की बलि देकर इन्हें पाना- लाना गलत है।

रंगभूमि में फैक्ट्री का मालिक सिगरेट बनाने की कंपनी लगाने के लिए सूरदास की जमीन हड़प लेना चाहता है। आज भी कृषि भूमि पर जबरन फैक्ट्रियां लगाई जा रही हैं। बंगाल की नैनो टाटा फैक्ट्री सिंगूर- नंदीग्राम- की कहानी यही है। औद्योगिकरण कृषि को तबाह कर किया जा रहा है। सोचनीय यह है कि अगर कृषि भूमि ही नहीं होगी तो अन्न कहां से पैदा होगा। अभी तक अन्न बनाने वाली मशीन- कारखाने नहीं पैदा हो सके हैं। गांधीजी ग्राम केंद्रित ,विकेंद्रित और सहकारी व्यवस्था के पक्षधर थे । जबकि नेहरू औद्योगीकृत ,महानगरी, केंद्रीय कृत व्यवस्था के खेती के नए कानून बनाकर जैसे अंग्रेजो ने भारतीय किसान को चूसने का कार्य किया उसका शोषण किया वैसा ही आज भी हो रहा है। आज कृषि कानून को अंतरराष्ट्रीय पूंजी के नियंत्रण में लाया जा रहा है तरह-तरह के कानून, प्रलोभन, कर्ज किसानों के शोषण के हथकंडे हैं।

कैसी विडंबना है कि देश खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बताया जा रहा है परंतु किसान आत्महत्या कर रहा है। गांव आज भी बदहाल है। भौतिक चकाचौंध के बावजूद खस्तेहाल हैं। खाद्यान्न का इन्टेक यानी प्रति व्यक्ति उपभोग कम होता जा रहा है अर्थात कहीं ना कहीं हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती जा रही है जिस वजह से प्लेग बीमारी, कोरोना संकट ,शहर से पलायन, खाने की मुसीबत ,संसाधनों का संकट आदि समस्यायों का सामना करना पड़ता है |

कर्ज भारतीय समाज की एक पुरानी बीमारी रही है। आज भी यह वही है | प्रेमचंद ने इसे गांव की एक बड़ी समस्या बताया है। महाजन ,सेठ, साहूकार सूद पर पैसे देकर खलिहान में ही किसान की पूरी पूंजी खेती हड़प लेते हैं। यही नहीं, उन्हें कर्ज न चुका पाने पर बटाईदार बना लेते हैं। यहां तक कि उनके खेत गिरवी रख लेते हैं, खेत अपने नाम लिखवा लेते हैं। विवाह, आदि कोई काज- प्रयोजन हो तो बिना कर्ज के गांव वालों का काम नहीं चलता। बैंक कर्ज के नए साहूकार हो गए हैं जो खेती को नीलाम कर रहे हैं। यह आज के भी भारतीय गांव का सच है। अन्न मिलने से जो पैसा किसान को मिलता है, सूदखोर वहां पहले ही पहुंच जाते हैं और जबरन वसूल लेते हैं। नए प्राइवेट बैंकों का उदय सूदखोरी की पुरानी व्यवस्था का प्रतीक है। बैंकों का निजीकरण किया जा रहा है जिससे वह मुनाफे कमा सके। बड़े-बड़े पूंजीपति बैंक के मालिक है वैसे ही जैसे मिल मालिक 'खन्ना साहब' बैंकर भी है। महाराष्ट्र में ऐसा देखा गया है कि कृषि सामानों , बीज ,खाद , कीटनाशक के लिए बड़े-बड़े दुकानदार हैं, वे सूदखोरी करते हैं। वे उधार पर किसानों को बीज खाद इस शर्त पर देते हैं कि फसल तैयार होगी तो उसके माध्यम से उसकी बिक्री होगी। परिणाम यह होता है कि जैसे होरी के घर कुछ अनाज नहीं पहुंचता था ,वैसे ही आज के किसान के लिए भी, कर चुकाने से अधिक कुछ नहीं बचता है। परिणामस्वरुप किसान आत्महत्या करने को विवश है।

आज सब कुछ बाजार द्वारा संचालित हो रहा है। और बाजार को सट्टा बाजार संचालित कर रहा है। इसलिए किसानों के बीच भी मुनाफा कमाने के लिए, बाजार के अनुरूप अपनी खेती करने के लिए पैदावार बढ़ाने के लिए होड मची है। कर्ज लेकर खेती करने का एक खतरनाक खेल चल रहा है और बाजार किसान की उपज के साथ खिलवाड़ कर रहा है। किसान के बर्बाद होने का कारण है फसल का उचित मूल्य न मिलाना, परिणाम स्वरुप कर्ज का बढ़ता बोझ। इसलिए वे आत्महत्या के लिए विवश हो रहे हैं। वह खेती बेचकर, छोड़कर शहरों की तरफ मजदूरी के लिए कूच कर रहे हैं। आज के भारतीय जीवन का यही सच है। 21वीं सदी के भारतीय ग्राम और गांव के बाशिंदे के जीवन का यही यथार्थ है।

निश्चित रूप से संवैधानिक प्रावधानों के चलते अब अछूत की समस्या नहीं रह गई है। लेकिन जातीय विद्वेष पहले से अधिक बढा है। पहले गांव में छोटे-बड़े,ऊंचे-नीचे सबके प्रति सम्मान नहीं, पर संवेदना का भाव था। आज वह संवेदना ही सूख गई है। यह समस्या "ठाकुर का कुआं " में भौतिक - शारीरिक अछूतपन की थी आज मानसिक - भावात्मक अछूतपन की है। जिसे पहले से कम खतरनाक नहीं माना जा सकता। कभी बिगाड़ के डर से, ईमान की बात ना कहो में का असर इतना था कि पंच में परमेश्वर का वास हो जाया करता था। आज स्थिति और बदत्तर है। आज ईमान - धर्म की बात करने वाला निपट मूर्ख है। चालबाज धूर्त का ही बोलबाला है। "पंच परमेश्वर " कहानी में- प्रेमचंद गांव संचालन की धुरी ईमान - धर्म की स्थापना कर न्याय की तरफदारी करते हैं। आज यह धुरी ही खिसक चुकी है। गोबर होली के अवसर पर गांव आता है तो उसके नेतृत्व में जो कांड होता है उसके जरिए गांव के शासको का मजाक उड़ाया जाता है। इस प्रकार प्रेमचंद एक सांस्कृतिक प्रतिरोध भी दर्ज करते हैं।

अंत में शिवकुमार मिश्र के अनुसार , "प्रेमचंद अपने समय में भी और हमारे समय में भी सभी मामले में एक आधुनिक लेखक के रूप में अपनी पहचान कराते हैं। आधुनिक वह नहीं होता जो आधुनिक समय में जीता है और लिखता है। हमारे समय में जीने और लिखने वाले अधिकांश आधुनिक समय में भी मध्यकालीन मानसिकता को लिए हुए जीते और लिखते हैं। ऐसे लोग हमारे समय में होकर भी उसके नहीं है। प्रेमचंद इसलिए आधुनिक है कि वह अपने समय की समस्याओं के समाधान अपने समय के बीच से ही लाते और ढूंढते हैं।"

*Corresponding Author: - दामोदर द्विवेदी

संदर्भ -

१. गाँधी,महात्मा . (१९४६). मेरे सपनों का भारत, साप्ताहिक हरिजन
२. गाँधी,महात्मा . (१९४६). मेरे सपनों का भारत, साप्ताहिक हरिजन ,पृष्ठ संख्या ७८
३. गाँधी,महात्मा . (१९४६). मेरे सपनों का भारत, साप्ताहिक हरिजन ,पृष्ठ संख्या ११२
४. प्रेमचंद, गोदान,पृष्ठ संख्या २७९

*Corresponding Author: - दामोदर द्विवेदी